खेती अपनी संस्कृति

एक मनुष्य अपने संस्कार से जाना जाता है। वैसे ही एक देश भी उसके संस्कार से जाना जाता है। एक मनुष्य जोभीसीखता है, करता है वही उसका संस्कार हैं। हमारेलिए, हमारा देश एक ही चीज से जाना जाना हैं। वह हैं हमारी संस्कृति जो हैं "खेती"। हमारे पूर्वजों के जीने का जरीन्या था खेती-पाड़ी। खेती अपनी संस्कृति मानकर जीनेवाले लोग हैं किसान। जो हमारे पेट भरते -भरते अपने बारे में सोचते तक नही। हमारे देश आधि से ज़्यादा लोग किसान हैं। वह अपनी छोटी सी जगह पर दिन-रात काम करके भी उनका जीवन बहुत ही दर्दनाक है। हमारे केरल को सभी 'देवों' का अपना राज्य केहते हैं क्योंकि यही हमारी संस्कृति है जो हमारे पूर्वजोने हमे धान में दी हैं। इसी परंपरा को हम आज तक निभाते आए हैं।

इससे हमें बहुत सारें फायदें हैं, जैसे की हम खुद बिना किसीके मदद या सहायता के बिना हम हमारेलिए ताज़ी सब्जीयाँ आ सकते है। इसके वजह से हमें दूसरों पर सब्जीयों केलिए निर्भर नही होना पड़ता हैं। दूसरें देशों को भी हम हमारे सब्जीयाँ बेच पाएगे इससे हमारे देश को भी फायदा होगा और किसानों को भी।

"खेती की उन्नति,
मतलब देश की उन्नति"

यह बिलकुल सच है क्योंकि हमारे देश में सबसे जयादा गरीब एवं किसान हैं। अगर खेती में उन्नति होगी तो जयादातर किसान गरीबी से बाहर निकलपाएँगे इससे हमारे देश की भी उन्नति होगी कई तरह। हमारे देश खेती से ही बना है। आज वो हमारा देश इस पत तक पहूँचा है तो यह सिर्फ और सिर्फ हमारे पूर्वजों की बदौलत है। इस संस्कार के वजह से हम आज देशों से ज़्यादा व्यक्ति बिना कोई बीमारी के, ना ही कोइ रोग से

च्वस्त जी रहा हैं। हमारे केरल के हर व्यक्ति अपनी प्रकृति की और कृषि की वर्णना करते-करते तक के नही हैं। पेहले हम खेती को अपनी देवी मानते थे उससे बहुत प्यार करते थे। किसान सुभह सवेरें उठकर अपने खेतों में घूम कर सभी पौधों को पानी देखर, अन सबका फल खाते थे। उनके लिए सबसे अच्छी कहावत हैं-

"मेहनत का
फल मीठा"

लेकिन आज हमारे समूह हो रहा हैं वह बिल-कुल उलठा है। जो जमीन जहाँ किसान मेहनत से खेती करते थे उस जगहों में आज बहुत बड़ी-बड़ी इमारत, घर बन गये हैं। इससे हमारे देश में किसानों की संख्या कम हो गई हैं और किसान के खेतों की संख्या भी कम हो गई है मतलब उन-के खेती करने की जमीन आज चीन ली गई। जो किसान हमारे देश में अभी हैं वह गरीबी और जमीनदारों के शोषण के शिकार हो जाते हैं।

उनके जीने का सहारा हैं खेती और खेती करने के लिए अच्छी बारीश, बीज, खात आदि चाहिए होगा। लेकिन गरीब किसान यह सब कैसे खरीद सकते हैं। इसीलिए हमारे यहाँ के किसान या तो आत्महत्या करते हैं या खेती छोड़ देते हैं। इन सब के बीच अके ऊपर होनेवाली बीमारीयाँ, पौधों में होनेवाली बीमारी जमीनदार के ऊपर का खर्च यह सब उनको अंदर से तोड़ देता है। इसीलिए आज-कल हमें दूसरे देशों से सबज़ीयाँ, फल आदि के लिए निर्भर रहना पड़ता हैं। जो सबज़ीयाँ और फल जों हम बाहर से मँगवाते हैं उन में विशीले पतार्थ होते हैं। जो हमें जानलीवें बीमारी पर ले जासकते हैं। और हमारे सस्कृति पर यह बहुत बुरा असर पड़ रहा हैं। आज कल कोई भी किसान बनना नही चाहता अगर सौ लोगों में कौन किसान बनने को तैयार है तो यह पूचेगें तो सिर्फ एक या दो हाथ ही उठेगें। आज कल हमारे देश के हर व्यक्ति अपने बच्चे को किसान नही डॉक्टर या इंजिनेर बनाना चाहता है।

" प्रार्थना करो जान देनेवालों की
और
पेट भरने वालों की "
यह कहावत आप सभी को पता है। क्या यह आज हमारे समूह में प्रतिपाल होता है। नही!! क्योंकि आज कल सिर्फ किसान ही हैं जो आधुनिकता से दूर है इसी बात का फायदा उठाते हुए बहुत सारे लोग उनको चूसते है उनकी सभी संपत्ती को अपना बनाते हैं।

लेकिन आज कल मनुष्य को इसके ज्ञान हासिल कर रहे हैं। इसीलिए किसानों की स्वरक्षा के-लिए सरकार ने कई सारे कदम उठाए जैसे "कि-सान कल्याण योजना" इस प्रोजक्ट योजना से किसान को कम दाम में अच्छे और प्रकृति दत्त खात और बीच आदि मिलता हैं। आज कल खेती करने केलिए आधुनिकता की भी इस्तमाल होती हैं खेती करने केलिए मशीनों का उपयोग और बहुत जलदी फल देने वाले पौधे भी मिलते हैं। अब

सारे लोग खेती की महत्व को समझकर खेती की ओर जा रहे हैं। आज कल खेती-पाड़ी करने और सीखने केलिए भी सरकार ने योजना बनाये हैं।

"हैटेक फार्मिंड"

आज सारे किसानों को हैटेक फार्मिंड़ की ओर ले जाया गया है। उनको आधुनिकता का खेती में उपयोग आदि सरकार सिखाते हैं। अपने संस्कारों की ओर मनुष्य को वापस लाना ही इन सबका उद्देश है। खेती से बिछड़ा हुआ मुनुष्य अपने माँ से बिछड़ा हुआ बच्चे की समान है। प्रकृति क्रोद से भी किसानों को बचाने की योजनाए हैं। किसानों के अंदर उम्मीद की किरण आज जल रहें हैं। आज कई सारे "ओणलैन मार्कत" भी है किसानों को अपने चीज़ें बेचने में मदद करता है और कई सारे लोग भी किसानों की मदद कर रहें हैं। वह जानते है की आज अगर स्वस्थ जीवन जीना हैं तो किसान की जरूरत है। अपने संस्कार को फिर से याद करते हुए मनुष्य फिर से खेतों में निकल रहा

है। आज के युव जनों को भी खेती में उत्साहित होने केलिए सरकार के बहुत सारे योजनाये है।

" एक अच्छे कल के लिए
एक कतम "

यह समझकर खेती में कतम रखने वाले मनुष्य की बुराई ना करनी चाहिए लेखिन उनकी मदद करना चाहिए यह याद रखकर की वह है इसीलिए हमारे घर में हर व्यक्ति पेट भरकर खाना खा रहा है लेखिन एकबार उनके बारें में सोचिए और उनकी सहायता करें। सरकार अकेले कुछ नहीकर पाईगी हमारे भी फर्स हैं की पूर्वजों से मिली हुई हमारी पंरपरा हमारी सस्कृति खेती को ना भूलाए उसकी रक्षा करना और अपने बच्चों को भी यह सब सिखाना। किसान के महत्व के बारें मे सिखा-ना। तभी हमारा देश अपनी सस्कृति को वापस ला सकेगा। हम ही हैं उन बेचारे किसानों की उम्मीद। उनको दिल से अपनाना। हमारे सस्कृति खेति को बचाना।